फिल्म हब बनने में एयरपोर्ट बड़ी बाधा

फिल्म और टीवी क्षेत्र में सफलता को करना पड़ता है संघर्ष: अशोक

अमर उजाला ब्यूरो

झांसी। फिल्मकार अशोक कुमार की मानें तो जब तक एयरपोर्ट, उच्चस्तरीय सुविधाओं वाले होटल एवं टूरिज्म इंडस्ट्री का विकास नहीं होगा, तब तक बुंदेलंखड को फिल्म हब के रूप में तब्दील नहीं किया जा सकता है। फिल्म और टेलीविजन के क्षेत्र में काफी स्ट्रगल है। हिंदी भाषी क्षेत्रों के कलाकार प्रतिभाशाली होते हुए भी अंग्रेजी में कमजोर होने के कारण पिछड़ जाते हैं। वह एनीमेशन फिल्म प्रदर्शन के सिलसिले में सोमवार को नगर में आए थे।

बॉलीवुड में फिल्म प्रोडक्शन व स्क्रिप्ट राइटिंग से जुड़े अशोक कुमार की जड़ें शहर से जुड़ी हुई हैं। उनके पूर्वज झांसी के जमीदारों में शुमार थे। दादा रहीस बिहारी लाल श्रीवास्तव ने राजकीय संग्रहालय को हस्तलिखित रामायण व अन्य
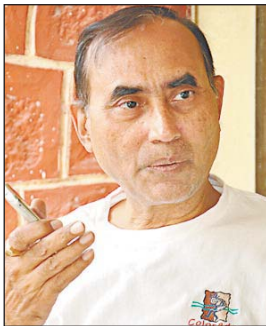
रंगमंच व थियेटर को बढ़ावा देने से उभरेंगे कलाकार

पुस्तकें भेंट की थी। लेकिन, कुमार वर्षों पहले मायानगरी मुंबई चले गए। इसके बाद लंदन में फिल्म मेकिंग, टेलीफिल्म मेकिंग, वीडियो शूटिंग आदि का अनुभव लेने के बाद फिर मुंबई में ही फिल्म प्रोडक्शन से जुड़ गए। 'अमर उजाला' के साथ बातचीत में उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि वह मुंबई में फिल्म निर्माण के साथ- साथ देश के विभिन्न शहरों में स्क्रिप्ट राइटिंग, फिल्म मेकिंग, टेलीफिल्म मेकिंग व एक्टिंग इंस्टीट्यूट में ट्रेनिंग भी देते हैं। उन्होंने कहा कि स्थानीय स्तर पर कलाकारों की प्रतिभा को तभी उभारा जा सकता है, जब यहां रंगमंच व थियेटर को बढ़ावा मिलेगा। इसमें लिए क्रिएटिविटी की जरूरत है। कुछ समय पहले तक कवियों, साहित्यकारों व समालोचकों के ग्रुप होते थे, जहां विचार- विमर्श होता था, लेकिन अब यह माहौल खत्म हो गया है। वह झोकन बाग स्थित माडर्न फिल्म इंस्टीट्यूट भी गए और वहां उभरते कलाकारों के लिए मुहैया कराए गए प्लेटफार्म की जानकारी ली।